।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ . (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

चतुर्दशी पर हुआ हाजरी का वाचन
मेरा पुरुषार्थ में विश्वास है – युवाचार्य महाश्रमण

–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 12 फरवरी : चतुर्दशी के अवसर पर आज तेरापंथ भवन (उपरलो) के विशाल पंडाल में आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित तेरापंथ की मौलिक मर्यादाओं का वाचन किया गया। युवाचार्य महाश्रमण ने साधु–साध्वियों को इन मर्यादाओं के पालन मे सजगता की प्रेरणा देते हुए कहा कि एक आचार्य का नेतृत्व, शिष्य–शिष्याएं न बनाने का विधान, वर्तमान आचार्य द्वारा मनोनीत उत्तराधिकारी को सहर्ष स्वीकार करना, आचार्य द्वारा योग्य व्यक्ति को दीक्षित करना और अयोग्य निकलने पर गणमुक्त कर देना एवं आचार्य की आज्ञा से साधु–साध्वियों को विहार चातुर्मास करने का निर्देश आदि मौलिक मर्यादाएं है। इन मर्यादाओं के कारण तेरापंथ अखंड बना हुआ है। मर्यादाओं का हनन न करने वाले साधु की रक्षा मर्यादाएं करती है। आदमी धर्म की रक्षा करता है तो धर्म भी आदमी की रक्षा करता है। इस मौके पर युवाचार्यश्री ने मर्यादाओं का विस्तार से प्रशिक्षण देते हुए साधु–साध्वियों एवं श्रावक–श्राविकाओं को समिति गुप्तियों के प्रति सावधानी बरतने की शिक्षा दी।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि मेरा विश्वास पुरुषार्थ में है। ज्योतिष की भविष्यवाणीयों पर ध्यान नहीं देता। मेरी व्यक्तिगतराय है कि व्यक्ति को आयु के सन्दर्भ में ज्योतिष पर ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। जो करणीय कार्य है उसको समय रहते ही कर लेना चाहिए। उन्होने गीता और उत्तराध्ययन पर समीक्षात्मक प्रस्तुति में कहा कि आत्मवाद और कर्मवाद के सिद्धांत पर जैन दर्शन चलता है। जैन शासन में अहिंसा पर सूक्ष्म रुप से ध्यान दिया गया है। आत्मा में आस्था रखने वाला साधना में प्रयुक्त होता है। आत्मा के अस्तित्त्व को मानने पर ही आध्यात्म का महत्व रहता है।

तेरापंथ द्वारा पूरे देश में हो रहा है 200 विद्यालयों का संचालन
एक महिला को सशक्त बनाने से पूरा परिवार सशक्त बनता है – युवाचार्य महाश्रमण

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि एक महिला को सशक्त बनाने का अर्थ पूरे परिवार को सशक्त बनाने का प्रयास है। अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान के द्वारा महिलाओं को सशक्त करने पर ध्यान दिया जा रहा है, यह बहुत महत्वपूर्ण है। इस संस्थान की बी.एड. की छात्राओं के सामने केवल शिक्षा प्राप्त करने का ही लक्ष्य नहीं है। क्योंकि आने वाले समय में इनको शिक्षा देने वालों की श्रेणी में जाना है। इसलिए इनकों केवल लौकिक विद्या ही नहीं अलौकिक विद्या का भी ज्ञान होना चाहिए। उन्होने कहा कि आलौकिक विद्या के अभाव में समस्याओं का सामना करने की शक्ति से वंचित हो जाते हैं। उन्होने संस्थान के हुए विकास की सराहना की।

संस्थान के सचिव प्रेमसिंह तलेसरा ने बताया कि आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव के समय में मेवाड़ के विनयपुरम क्षेत्र में स्थापित अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान में 35 गांवों से छात्राएं अध्ययन के लिए आती हैं। जिनकी निःशुल्क व्यवस्थाएं की जाती है। इस कॉलेज में जीवन विज्ञान के द्वारा सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण दिया जाता है। मुनि मोहजीत कुमार ने बताया कि तेरापंथ धर्मसंघ से जुड़े श्रावकों के द्वारा देश भर में 200 विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, प्राचार्य पुरुषोत्तम टेलर ने अपने विचार रखे। महाविद्यालय

क्रमश : 2

की छात्रा आर.पी. पटवा, दीक्षा शर्मा ने संस्थान की खूबियों को बयान करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ के आशीर्वाद की कामना की। प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल, शासनगौरव साध्वी राजीमति ने छात्राओं को प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत के बारे में मूलभूत जानकारी दी। इस मौके पर संस्थान के अध्यक्ष बच्छराज सेठिया भी उपस्थित थे।

अंकित सेठिया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक